Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B. A. Part – II (Hons)
Paper – IV
पाश्चात्य दर्शन का इतिहास
(Western Philosophy)

GRB BOOKS

1 David Hume (डेविड ह्यूम)

Notes

डेविड ह्यूम (1711 – 1776ई०) का जन्म स्काटलैण्ड में हुआ था। ये विशुद्ध अनुभववादी दार्शनिक थे। उनकी प्रसिद्ध दार्शनिक कृति है – मानव स्वभाव पर निबन्ध। (Treaties on human nature)।

ह्यूम का दर्शन इन्द्रियानुभववाद की पराकाष्ठा है। यद्यपि लॉक एवं बर्कले भी अनुभववादी थे और दोनों ने क्रमशः ईश्वर जड़तत्व तथा जीव एवं आत्मा – परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास किया था किन्तु ह्यूम ने आत्मतत्व को भी सत्ता में स्वीकार नहीं किया।

ह्यूम का यह दृढ़कथन है कि – इन्द्रियानुभव को ही ज्ञान का स्रोत मानने पर किसी 'तत्व' की प्रतिष्ठा नहीं हो सकती – न ईश्वर की न जीव (आत्मा) की और न जगत की। इन्द्रियानुभववाद ह्यूम के दर्शन में सन्देहवाद एवं अज्ञेयवाद बन गया।

लॉक ने माना था कि विज्ञान बाह्य पदार्थों या मूल गुणों एवं उपगुणों के प्रतिबिम्ब हैं, बर्कले ने कहा था कि – विज्ञान किसी के प्रतिबिम्ब नहीं हैं अपितु संवेदन या स्वसंवेदन ही विज्ञान हैं। ह्यूम ने यह स्वीकार किया कि – विज्ञान किसी बाह्य वस्तु के प्रतिबिम्ब नहीं हैं अपितु संवेदन या स्वसंवेदन के ही प्रतिबिम्ब हैं।

ह्यूम के अनुसार हमारा समस्त ज्ञान दो ही विषयों पर आधारित है –
(1) इन्द्रिय संस्कारों पर,

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes /

GRB BOOKS

और (ii) विज्ञानों पर।

'इन्द्रिय संस्कार' शब्द ह्यूम के दर्शन में पहली बार प्रयुक्त हुआ है किन्तु इसका कोई नवीन अर्थ नहीं है, इसका तात्पर्य — संवेदन एवं स्वसंवेदन से ही है।

ह्यूम ने 'विज्ञान' को इन्द्रिय संस्कारों (संवेदन-स्वसंवेदन) का प्रतिबिम्ब कहा है।

'विज्ञान' एवं 'संस्कार' में अन्तर स्पष्ट करते हुए ह्यूम ने कहा कि इन दोनों में कोई मूलभूत अन्तर नहीं है केवल संस्कारों की प्रतीति सुस्पष्ट एवं तीव्र होती है जबकि विज्ञानों की अस्पष्ट एवं क्षीण।

संस्कार इन्द्रिय जन्य होते हैं पंचज्ञानेन्द्रियों के संस्कारों को संवेदन, तथा अन्तःकरण के संस्कारों को स्वसंवेदन कहा जाता है।

रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द आदि की साक्षात् प्रतीति स्वसंवेदन संस्कार से होती है।

लॉक ने समस्त ज्ञान का आधार 'सरल विज्ञानों' को माना था और ह्यूम के अनुसार समस्त ज्ञान का आधार 'संस्कार' है।

ह्यूम के अनुसार विज्ञानों एवं संस्कारों के अतिरिक्त और कोई हमारे ज्ञान का विषय नहीं है अतः हमारे ज्ञान की सीमा विज्ञानों एवं संस्कारों तक ही सीमित है।

ह्यूम ने विज्ञानों के दो भेद — सरल तथा मिश्र,

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

एवं इसी प्रकार संस्कारों के भी दो भेद - सरल एवं मिश्र के रूप में किया है।

ह्यूम के अनुसार विज्ञानों का प्रवाह निरन्तर होता रहता है, किन्तु एक के बाद दूसरे आनेवाले विज्ञान में कोई सम्बन्ध नहीं होता, किन्तु ये आकस्मिक एवं असम्बद्ध नहीं होते। इनमें एक निश्चित क्रम पाया जाता है। (निश्चित क्रम को ह्यूम अनुषंग नियम (Law of Association) कहता है। इनमें केवल एक स्वाभाविक आनन्तर्य होता है।

ह्यूम ने इन विज्ञानों में परस्पर तीन प्रकार के सम्बन्ध की चर्चा की है।

(1) देशगत या कालगत साहचर्य - यदि दो वस्तुएँ एक स्थान या काल में हो तो एक के बाद दूसरा विज्ञान भी उपस्थित हो जाता है।

(2) सादृश्य सम्बन्ध - यदि दो वस्तुएँ एक समान हों तो एक के विज्ञान के बाद दूसरे के विज्ञान का आ जाना।

(3) कार्य-कारण सम्बन्ध - एक विज्ञान को दूसरे विज्ञान का उपस्थित होना (कार्य एवं कारण के रूप में)

ह्यूम ने इन्द्रियानुभव के आधार पर कार्य-कारण सिद्धान्त को धाराशायी कर दिया है। कार्य एवं कारण में कोई वस्तुगत, आन्तरिक एवं अनिवार्य सम्बन्ध नहीं है। यह एकमात्र मनोवैज्ञानिक

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes /

GRB BOOKS

कल्पना है।

ह्यूम ने स्वयं कहा था कि "मैं इस संवेदनापूर्ण सिद्धान्त का प्रतिपादन नहीं करता कि कोई भी कार्य-कारण हो सकता है, मेरे कथन का तात्पर्य सिर्फ इतना ही है कि कार्य-कारण भाव के अनिवार्य एवं आवश्यक सम्बन्ध न तो प्रत्यक्ष हो सकता है और न अनुमान।"

ह्यूम ने मानवीय ज्ञान के दो रूप बताये हैं —

(क) विज्ञानों के पारस्परिक सम्बन्ध का ज्ञान — जैसे गणित एवं तर्कशास्त्र का ज्ञान। यह असंदिग्ध एवं निश्चित होता है।

(ख) वस्तु जगत का ज्ञान — यह ज्ञान हमारी इन्द्रियों पर आधारित है। अतः यह निश्चित एवं असंदिग्ध नहीं हो सकता।

बर्कले ने विज्ञानों के अधिष्ठान के रूप में 'आत्मा' के अस्तित्व को स्वीकार किया था। किन्तु ह्यूम ने कहा कि जब कार्य-कारण सम्बन्ध ही वास्तुतः सत्य नहीं है तो विज्ञानों के कारण के रूप में किसी तत्व की सिद्धि संभव ही नहीं है। अतः उन्होंने आत्मा एवं ईश्वर दोनों तत्वों का भी खण्डन कर दिया।

ह्यूम के दर्शन को अज्ञेयवाद, संशयवाद, प्रत्यक्षवाद संदेहवाद इन्द्रियानुभववाद

सुगम पास-बुक AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

और संवेदन वाद आदि संज्ञाओं से अभिहित किया जाता है।

ह्यूम ह्यूम की आलोचना करते हुए बर्ट्रेण्ड रसेल ने कहा है कि "ह्यूम की आलोचना दार्शनिकों का प्रिय विषय रहा है।"

ह्यूम के संदेहवाद की प्रवृत्ति आत्मघाती है क्योंकि संदेहवाद के अनुसार स्वयं संदेहवाद ही संदेह का विषय बन जाता है।

ह्यूम के दर्शन का सार यह है कि अनुभवेतर विषय मानव बुद्धि के परे है, इनकी प्रामाणिकता संदिग्ध है। अतः धर्म और तत्वमीमांसा के विषयों में वे कुछ हद तक अवश्य संदेहवादी है, परन्तु गणित प्राकृतिक विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान की यथार्थता वे स्वीकार करते है अतः इन विज्ञानों में वे सन्देहवादी नहीं है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS